

## वर्णनात्मक विधि :-

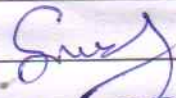
दूसरे स्थानों के प्राकृतिक दृश्य, जीवन तथा भौगोलिक विवरण, वर्णन द्वारा बालकों को बोधगम्य कराये जाने की परंपरा पहले से चली आ रही है। भौगोलिक तथ्यों तथा उनके कार्य-कारण सम्बन्धों को स्पष्ट वर्णन द्वारा बालकों के सम्मुख उपस्थित करना चाहिए। वर्णन के आधार पर बालक की कल्पना जागती है और वर्णित देशों की भूमि में मननसिक यात्राएँ कर लेता है।

वर्णन को आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न उल्लेख-समझी का प्रयोग यथावसर एवं यथा साध्य करना चाहिए। इस प्रकार के वर्णन में बालक रुचि लेते हैं तथा उनकी कल्पना शक्ति विकसित होती है। शिक्षक की सफलता तभी है, जब बालकों में यात्रा की तैयारी की चर्चा हो, अनचित्त द्वारा दूरियाँ जापी जायें, मणि के मुख्य ज्वालनों के नाम खोजे जायें तथा वर्णित वस्तुओं बालकों की कल्पना में आकार हो उठें।

वह वर्णन यात्रा, कहानी, वर्तमान के रूप में भी हो सकता है। बालकों स्वयं देखी हुई भौगोलिक घटनाओं का वर्णन का अवसर देना चाहिए। वर्णन के पश्चात् चित्रण निकालने का कार्य बालकों से ही करवाना चाहिए। भौगोलिक वर्णनों में एक अनिच्छित क्रम होना चाहिए और उन्हें स्वतः पूर्ण बनाना चाहिए। शिक्षक को पूर्ण सावधानी और तैयारी के साथ पहलू से पूर्व वर्णन के सभी अंगों पर विचार कर लेना चाहिए।

वर्णनात्मक विधि द्वारा पहले समय देश-विवेश के भूगोल का साधारण ज्ञान रखना वांछनीय है। बालकों को भी वर्णन करने का अवसर देना चाहिए। यदि किसी बालक ने कोई स्थान या वस्तु देखी है तो उसे उसका वर्णन कक्षा में सुनाने देना चाहिए। शिक्षक द्वारा वर्णन सरल और सुबोध्य भाषा में हो, जिसकी कक्षा के सभी बालक सुगमतापूर्वक समझ सकें और अपनी कल्पना द्वारा उसका मानसिक चित्र खड़ा कर सकें।

वर्णन में आने आने वाले भौगोलिक पारिभाषिक शब्दों को भली-भाँति स्पष्ट कर देना चाहिए। वर्णन के आधार पर कुछ भौगोलिक चिह्नक भी निकाले जाने चाहिए। वर्णन पूर्ण होना चाहिए, ताकी बालकों की कल्पना अधूरी या अर्ध-तृप्तिपूर्ण न रह सके। अध्यापक को कक्षा में पढ़ाने के पूर्व पाठ का ढाँचा अपने अस्तित्व में तैयार कर लेना चाहिए, अध्यापक को यह भी समझने में कठिनाई न हो। चित्र दृश्य रखना चाहिए कि प्रारम्भ के वर्णन का बालक दृश्यपूर्वक सुनें जिससे शेष वर्णन समझने में कठिनाई न हो। चित्र, मानचित्र, और माडल बड़े आकार के हों, ताकि रफ रफावट पर खड़े होकर सम्पूर्ण कक्षा देख सके। अध्यापक के दौरे चित्र या नमूने कक्षा के विद्यार्थियों को दिखाने समय अनुशासन सम्बन्धी समस्याओं का दृष्टान्त रखना चाहिए।

  
21.09.2020

प्राचार्य  
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय  
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान  
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया